# UTTAR PRADESH THROUGH THE AGES

*Editors*

AFZAL HUSAIN

S.Z.H. JAFRI

# 11

# कुमाऊं परिषद–संगठित आंदोलन का पर्याय 1916-1926

ज्योति साह

बीसवीं सदी के प्रारंभ में उदारवादी गोखले तथा उग्रवाद के जनक लोकमान्य तिलक के निर्भीक और स्पष्टवादी विचारों से पर्वतीय जनता का साक्षात्कार हुआ तथा स्थानीय शिक्षित एवं नवयुवक वर्ग की सोच को एक नवीन राष्ट्रवादी दृष्टिकोण प्राप्त हुआ। स्थानीय लोगों ने अखिल भारतीय कांग्रेस के अधिवेशनों में जाना प्रारंभ किया और स्थानीय स्तर पर कांग्रेस जैसे राजनैतिक संगठन की आवश्यकता को महसूस किया। फलतः सन् 1912 में कांग्रेस की स्थापना की गई। इसकी सभाएं प्रत्येक वर्ष कुमाऊं के प्रमुख नगरों में की जाने लगीं। कुमाऊं की कांग्रेस अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के द्वारा प्रशासनिक सुधारों के लिए किए जाने वाले कार्यों के विषय में रुचि रखने वाले शिक्षित उच्चवर्गीय शहरी राष्ट्रवादियों की संस्था थी। स्थानीय समस्याओं के समाधान हेतु स्थानीय स्तर के संगठन की कमी को अभी भी कुमाऊं के मध्यवर्गीय नेताओं द्वारा महसूस किया जा रहा था। बद्रीदत्त पांडे ने सन् 1914 के *अल्मोड़ा अखबार* के संपादकीय में स्वतंत्रता के लिए सशक्त आंदोलन तथा स्थानीय स्तर पर एक संगठन की आवश्यकता का उल्लेख किया था :

> ... अब सभा, सोसाइटी, समाज के आंदोलन पर नीति निर्भर है, इसलिए कूर्मांचल से ही इसका प्रचार आवश्यक है। ... क्या ही अच्छा होता यदि हमारे सभ्यजन कूर्मांचल परिषद नामक एक समिति खोलते, जिसमें हमारी राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक तथा साहित्यिक दशाओं पर विद्वत्तापूर्ण विचार हो।[1]

परिणामस्वरूप सन् 1916 में बद्रीदत्त पांडे, मोहन जोशी, हरगोविंद पंत, गोविंद बल्लभ पंत, इंद्र लाल साह, चंद्र लाल साह, लक्ष्मीदत्त शास्त्री, प्रेम बल्लभ पांडे, ठा. मोहन सिंह दढ़म्वाल आदि ने कुमाऊं परिषद की स्थापना की।[2] अल्मोड़ा की कोसी घाटी के गांवों में कुमाऊं परिषद की शाखाएं खोलने में प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात यूरोप से वापस लौटे सैनिकों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया।[3] कुमाऊं से अमृतसर कांग्रेस में जनवरी 1920 में लगभग 100 कार्यकर्ता सम्मिलित हुए थे, जिनमें प्रमुख मुकुंदी लाल, अनुसूया प्रसाद बहुगुणा, बद्रीदत्त पांडे, गोविंद बल्लभ पंत, मोहन सिंह महता आदि थे।[4] अमृतसर कांग्रेस से लौटने के पश्चात इन स्थानीय नेताओं ने ग्रामीण क्षेत्रों में संगठन कार्य और सभाएं कीं तथा कुमाऊं परिषद की अनेकों शाखाएं स्थापित कीं। स्थानीय राष्ट्रवादी ग्रामीण जनता को संगठन की आवश्यकता का महत्व बता रहे थे और शोषण के खिलाफ आंदोलन करने के लिए प्रेरित कर रहे थे। स्थानीय राष्ट्रवादी पत्रकारिता भी ग्रामीणों को संगठित होने के लिए प्रेरित कर रही थी।[5] प्रारंभ में *अल्मोड़ा* अखबार तथा 1918 के पश्चात शक्ति ने कुमाऊं परिषद के समाचारों को निरंतर प्रकाशित करने तथा स्थानीय जनता से अधिवेशनों में अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होने का आह्वान किया। साथ ही ग्रामीणों के पत्रों के माध्यम से उनकी समस्याओं को प्रकाशित कर कुमाऊं परिषद को नीति निर्धारण हेतु दिशा प्रदान करने का महती कार्य